ईश्वरवाद (Theism)

ईश्वरवाद का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है – व्यापक और संकीर्ण। व्यापक रूप में ईश्वरवाद उस सिद्धांत को कहते हैं, जो ईश्वर को सत्य मानता है तथा इसके अन्तर्गत ईश्वर-सम्बन्धी सभी सिद्धांत आ जाते हैं। संकीर्ण रूप में यह उस सिद्धांत को कहते हैं, जो एक व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर का समर्थन करे। इस अर्थ में ईश्वरवाद एकेश्वरवाद (monotheism) का ही एक विशेष रूप कहा जायगा। इस प्रकार से यहाँ पर हम ईश्वरवाद के संकीर्ण रूप की चर्चा करेंगे।

ईश्वरवाद की विशेषताएँ :-

(1). ईश्वरवाद के अनुसार ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है क्योंकि व्यक्तित्व-पूर्ण ईश्वर धार्मिक भावना की संतुष्टि करने में व्यक्तित्वहीन ईश्वर की अपेक्षा अधिक समर्थ है। धार्मिक चेतना के लिए उपासक और उपास्य के बीच संबंध रहना आवश्यक है। ईश्वर उपास्य है और जीवात्मा उपासक। अतः ईश्वरवाद ईश्वर और जीवात्मा में इस प्रकार के संबंध की स्थापना करके धार्मिक भावना को संतुष्ट करता है। यदि ईश्वर में व्यक्तित्व न हो, तो ऐसा ईश्वर भक्तों के लिए करुणा, प्रेम, सहानुभूति नहीं दिखा सकता और इससे धार्मिक भावना की तुष्टि नहीं हो सकती।

(2). इसके अनुसार ईश्वर विश्वव्यापी और विश्वातीत दोनों है।

(3). ईश्वर आंतरिक तथा बाह्य दोनों ही है, किंतु ससीम आत्माओं से वह बिल्कुल बाहर रहता है। इसका अर्थ यह है कि ईश्वर ने ससीम आत्माओं को इच्छा-स्वातंत्र्य (Freedom of will) प्रदान किया है। मनुष्य अच्छे या बुरे कर्म करने के लिए स्वतंत्र है। इस प्रकार इच्छा-स्वातंत्र्य का समर्थन करके ईश्वरवाद नैतिकता

तथा धर्म दोनों के लिए स्थान सुरक्षित कर देता है।

(4). इसके अनुसार ईश्वर तथा विश्व दोनों एक नहीं हैं। अर्थात् सभी ईश्वर पर आश्रित हैं।

(5). ईश्वर सर्वशक्तिशाली (Omnipotent), सर्वज्ञ (Omniscient), सर्वव्यापक (Omnipresent) एवं करुणामय है। वह विश्व का उपादान कारण और निमित्तकारण दोनों ही है।

(6). इस सिद्धांत के अनुसार मानव-दुःखों का अंत संभव है। ईश्वर करुणामय एवं सर्वशक्तिसम्पन्न है। मनुष्य अपने स्वतंत्र संकल्प द्वारा ईश्वर की कृपा से दुःखों एवं बुराईयों पर अधिकार जमा सकता है तथा नाश भी कर सकता है। इससे आशावाद (Optimism) का जन्म होता है और सुधारवाद (Melionism) को समर्थन प्राप्त होता है।

ईश्वरवाद के उदाहरण :→ इसका (ईश्वरवाद) का समर्थन पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों दर्शनों में हुआ है।

पाश्चात्य दर्शन में अधिकांश ईश्वर-संबंधी सिद्धांत ईश्वरवादी है। इन समर्थकों में कुछ विशेष उल्लेखनीय हैं — देकार्त, बर्कले, कांट, जेम्सवार्ड, प्रिंगल पैटीसन और फ्लिंट। वहीं दूसरी ओर भारतीय परम्परा में रामानुजाचार्य, निम्बार्क, बल्लभाचार्य आदि हैं। इन सभी का संक्षिप्त वर्णन क्रमानुसार निम्नवत् है।—

(1)- पाश्चात्य ईश्वरवादी विचारक →

देकार्त → ये बुद्धिवादी दार्शनिक हैं। इनके अनुसार ईश्वर प्राथमिक द्रव्य (Primary Substance) हैं तथा मन और शरीर गौण द्रव्य (Secondary Substance) हैं, जो ईश्वर पर ही आश्रित हैं। ईश्वर असीम तथा स्वतंत्र है। वह शाश्वत, सर्वव्यापी, एवं सर्वज्ञ है। वह शक्तिसंपन्न है और विश्व का रचयिता एवं पालनकर्ता भी है।

बर्कले → ये अनुभववादी दार्शनिक हैं। पहले तो वे ईश्वर को सत्य मानने के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि इसका अनुभव नहीं होता। किंतु बाद में चलकर उन्हें ईश्वर की सत्ता स्वीकार करनी पड़ी और उन्होंने इसका प्रचार किया एवं भौतिकवाद का खण्डन किया। वह ईश्वर को असीम परमसत्ता मानते हैं। ईश्वर ही दृश्य जगत और ससीम आत्माओं का आधार है। इसलिए, ससीम आत्माओं के अभाव में भी वस्तुओं का अस्तित्व बना रहता है।

कांट → ये समीक्षावादी हैं। इन्होंने अपने दार्शनिक जीवन के प्रारम्भ में आत्मा और ईश्वर को अज्ञात और अज्ञेय (UnKnown and UnKnowable) बताया है। उनका यह विचार उनकी पुस्तक 'Critique of pure Reason' में प्राप्त होता है। बाद में जीवन के व्यावहारिक पक्ष को देखते हुए उन्होंने 'Critique of practical Reason' में आत्मा और ईश्वर को सत्य बताया। इस प्रकार से वे ईश्वर को विश्व का रचयिता एवं रक्षक मानते हैं।

जेम्स वार्ड → इनके अनुसार ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है। इसमें संकल्प-शक्ति एवं बुद्धि विद्यमान है। वह विश्व का रचयिता एवं पालनकर्ता है। अंतर्यामी ईश्वर ने जीवात्मा को इच्छा-स्वातंत्र्य प्रदान किया है। अतः मनुष्य पाप एवं पुण्य का स्वयं भागी है।

प्रिंगल पैटीसन → इन्होंने अपनी विख्यात पुस्तक 'The Idea of God in Recent Philosophy' में ईश्वरवाद की चर्चा करते हुए कहा है कि, ईश्वर ही इस विश्व का रचयिता है। आत्मा और ईश्वर में ठीक वैसा ही संबंध है, जैसा अंशी और अंशों के बीच होता है। ईश्वर और विश्व में आवश्यक संबंध है। मनुष्य के लिए ईश्वर अनिवार्य है, क्योंकि ईश्वर मनुष्य से असंबद्ध होकर निरर्थक बन जाता है। अतः ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है।

(2).

भारतीय ईश्वरवाद :- भारतीय दर्शन ईश्वरवाद के उदाहरणों से भरा हुआ है। वेद और उपनिषद ईश्वर-वादी धारणा से ओत-प्रोत हैं। यहाँ ईश्वर को पुरुषोत्तम कहा जाता है। गीता में भी ईश्वरवाद की सर्वत्र उदाहरण प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में कहा गया है कि मूल तत्व परम-पुरुष है, जिसमें भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल की वस्तुएँ विद्यमान हैं। वह परमपुरुष इतना महान है कि उसके केवल एक-चौथाई अंश से ही विश्व बना है और शेष तीन-चौथाई विश्व के बाहर है। श्वेताश्वतर उपनिषद में भी ऐसा वर्णन आया है। गीता में भी ईश्वर को पुरुषोत्तम माना गया है। यह ईश्वर विश्व में व्याप्त है फिर भी उससे बाहर भी है। इसके समर्थक हैं - रामानुज, निंबार्क और बल्लभाचार्य आदि।

रामानुजाचार्य → इनके अनुसार ईश्वर ही एकमात्र परमार्थ है। वह सगुण, अनंत ज्ञान, सौंदर्य एवं करुणा आदि गुणों से युक्त है। वह विश्व का स्रष्टा, पालक एवं संहारक भी है। विश्व सत्य है तथा ईश्वर विश्वव्यापी एवं विश्वातीत दोनों है। ईश्वर इस विश्व का निमित्त और उपादानकारण दोनों है। वह किसी आवश्यकतावश नहीं, बल्कि प्रेमवश विश्व की सृष्टि करता है। रामानुज विष्णु को ईश्वर के रूप में मानते हैं तथा लक्ष्मी को विष्णु की पत्नी तथा संसार की जननी कहते हैं।

निंबार्क → ये भी ईश्वर को परमसत्ता मानते हैं। किंतु विष्णु और लक्ष्मी के स्थान पर वे कृष्ण और राधा को स्वीकार करते हैं। ईश्वर कई रूपों में अवतार ग्रहण कर सकता है। वह विश्व का निमित्त और उपादानकारण दोनों है। जीवन का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति है। कृष्ण भक्ति मोक्ष का साधन माना गया है। अनुराग या प्रेम मोक्ष प्रदान करता है।

ईश्वरवाद का मूल्यांकन :→ ईश्वरवाद अन्य सिद्धांतों से अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है फिर भी यह बुद्धि एवं हृदय को संतुष्ट नहीं कर पाता। इसमें दार्शनिक एवं धार्मिक दोनों दृष्टियों से दोष पाए जाते हैं। परन्तु कुछ दोषों के रहने पर भी ईश्वरवाद अन्य ईश्वरवादी सिद्धान्तों की अपेक्षा अधिक उपयुक्त है। गैलोवे (Galloway) का कहना है कि, "ईश्वरवादी मत पूर्ण रूप से धार्मिक मनोवृत्ति का फल है। यह मानव की प्रत्येक धार्मिक आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को पूर्ण करता है।"

फ्लिंट ने भी ईश्वरवाद को धार्मिक दृष्टिकोण से संतोषप्रद बताया है। इनके अनुसार ईश्वरवाद धर्म का पर्याय है जो कि उच्चकोटि का है। उनका यहाँ तक कहना है कि, "ईश्वरवाद से न्यून कोई धर्म स्वीकार्य नहीं है और ईश्वरवाद से अधिक कुछ संभव नहीं है।"

—×—